श्री बालअली कृत नेह प्रकाश

॥ दोहा ॥

भूषण नग जगमग रहे, दरश करत बड़ भागि ।
जनु दृगसों अनुराग कर, मन तन सों रहे लागि ॥१

मुक्तामाल कि खुभि रही, प्रिया हँसनि लगि हीय ।
रहे अङ्गसों उरझि अकि, सज्जन मन कमनीय ॥२

गूढ़ वेद वेदांत को, निज सिद्धांत स्वरूप ।
जयति सिया अह्लादिनी, शक्ति-शक्ति गनभूप ॥३

प्रकृति पुरुषते जे परे, परातत्व रस रासि ।
सो वह परम उपासना, वहै जु परम उपासि ॥४

एकाकी नहि रमन ह्वैं, चहत सहायहि सोइ ।
रमत एकही ब्रह्म यह, पति पत्नी तनु होइ ॥५

जग जिनके सुख सिंधु के, लव उप जीवत जीव ।
पगे प्रेम रस स्वाद सों, रमत प्रीया अरु पीव ॥६

यह सब साज समाज सुख, धाम परेश समान ।
काल कर्म गुण प्रकृतितै, परतर जानत जान ॥७

॥ सोरठा ॥

महल बहुत छबिमान, जरे जरायनि जगमगे ।
तने घने सुबितान, परदाबने बिछावने ॥८

॥ दोहा ॥

सींचे बिबिधि सुगन्धनव, मुक्ता बंदन माल ।
चहुँदिशि अगणित नगनयुत, बने झरोखा जाल ॥९
सुन्दर गादी गेंडुवा, बिबिधि खेल के साज ।
युगल चरण सेवैं तहां, प्रमुदित सखी समाज ॥१०
श्री बिमलारु बिशारदा, बिजया बामाबाम ।
कमला कांतिमती कला, केलि, कोविदा नाम ॥११
कामा केशि किशोरिका, कांचि कोशला कालि ।
कंजा क्षीरु कलावती, कंजलोचना आलि ॥१२
कुँजा कलिका कोकिला, काशि कृपाला जानि ।
कल्याणी गन कुंकुमा, कृपा पूरणा मानि ॥१३
कृष्ण शारिका कामदा, कृपावती सुखरूप ।
चन्द्रा चन्द्राकला अली, चन्द्राननी अनूप ॥१४
चम्पक बरणी चन्द्रिका, चारु दरशना बाल ।
चारुद तीरू चकोरिका, पुनिगण चम्पक माल ॥१५
देव वर्णिनी देविका, देव रूपिणी नारि ।
देवी दुर्गा दामिनी, दैवज्ञा उर धारि ॥१६
गनिज्ञाना गुण सागरा, ज्ञप्ति गुणज्ञातीय ।
नन्दानवलासी नवल, नागरि अतिकमनीय ॥१७
प्रेमा परमा पावनी, प्रेमप्रदा तिहि ठौर ।
प्रियंबदा परज्ञा परा, भनि पौढ़ा अलिऔर ॥१८

भाव विदा भावनि भवा, भासि भावरा भीरू।
मुग्धा मुदा मनोरमा, सखि मृग सावा धीरू ॥१९
मोद दायका माधवी, मृगनाभी शिरनाइ।
मानिनि माधुरि मंगला, मान कोविदा गाइ ॥२०
रहसज्ञा रसरूपिणी, रम्या रामा लेखि।
और रमा रतिबर्द्धिनी, रोहा उर्णि विशेखि ॥२१
शांता सुखदा स्वच्छदा, सीमंतिनि उरआनि।
श्यामासती सुमध्यमा, साधु मती सुख साखि ॥२२
शृङ्गारा चतुरा सुरसि, साहसिका सुकेशि।
सुरा सुन्दरी शारदा, भनि सांभवी सुदेशि ॥२३
सुरभि सरूपा, सागरा, संज्ञा नारि सुनामि।
शांति रूपिणी शंकरी, सुप्रिया सुछेपाभामि ॥२४

॥ सोरठा ॥

यद्यपि अली अपार, मुख्य गनी गणनायक।
द्वेय हजार हजार, यक यक कि सखि किंकरी ॥२५

॥ दोहा ॥

तुल्यवेश गुण रूपसखि, न्यून किंकरी जानि।
गति बल धन सुख सबनिको, एक मैथिली मानि ॥२६
दया दृष्टि सर्वेश्वरी, दइसेवा जो जाहि।
भरी प्रेम आनन्द रस, सखी करत सो ताहि ॥२७

केश प्रसाधन करहिं कोउ, सुरभि सुतेल चढ़ाई ।
पहिरावहि धूपित बसन, कोऊ उबटि नहवाई ।।२८
कोउ अलि बिबिध सुगन्धयुत, रचहिं वेष शृङ्गार ।
उष्ण असन वहुरसन दै, बारि सुरभि हिमसार ।।२९
बीरी ललित सवांरि अलि, दुहूं ललन कर देहिं ।
बड़भागिन तांबूल कोउ, झुकि पसारि कर लेहिं ।।३०
गहे सो चामर छत्र कोउ, क्रीड़न गन्ध रसाल ।
बसन बिभूषण आदरस, कोउ कुसुमन की माल ।।३१
ठाढ़ी अलि चहुँ ओर को, रचहिं विछौना वान ।
धरहिं वाद्य पुनि करहिं कोउ,उघटि नृत्य सुरगान ।।३२
रीझि अली दुहुँ ललन छबि, निरखि बलैया लेहिं ।
राई लोन उतारि पुनि, बारि अपनपौं देहिं ।।३३
अनगिनती गिनतीन मैं, निपटहु कपट निहारि ।
सिय कीनी चेरी चरण, सीस नवावत नारि ।।३४
तिन मधि बिहरत रँग भरे, नवल किशोर किशोरि ।
नेकन न्यारे होत कहुँ बँधे प्रेम की डोरि ।।३५
मुख छबि मिलि इक मुकुर मैं, कहुँ निरखत दृगकोर ।
कबहुँक इकटक परसपर, ह्वै रहे चन्द्र चकोर ।।३६
असुवन अंतर करत लखि, प्रिय दरशन बिच आई ।
निंदत दोउ आनन्द को, ललन हिये अकुलाइ ।।३७

कबहुँ नेह के भारभरि, लपटि लटकि रहे दोउ ।
छके प्रेम मादिक पिये, रहत न तन सुधि कोउ ।।३८

कबहुँ कुवँर दोउ परसपर, निजकर करत सिंगार ।
बीरी खात खवात पुनि, बहुबिधि करत बिहार ।।३९

कबहुँ केलि कंदुक गहत, कहुँ पासन सतरंज ।
कबहुँक हित बतियां करत, बढ़त मंजुरस पुंज ।।४०

।। नायक बचन सोरठा ।।

किये सपथ कहुँ तोंहि, प्राण प्रिया निज हीय की ।
अस न अपनपौ मोहिं, जैसी प्रिय तुम लगतिहौ ।।४१

।। दोहा ।।

मिलौं कोटि ब्रह्मांड हूँ, अस न मोहिं आनन्द ।
होतजु तब मुख कमल को, पान करत मकरंद ।।४२

श्रवण नैनमन तुम बसे, और न कछू सुहात ।
तेरीहित चितवनि उपर, वारे सब सुख जात ।।४३

मेरे हिय आनन्द को, तुमहीं प्रिये निदान ।
हौजिय की जीवन जरी, प्राननहूँ के प्रान ।।४४

निरखत तुम मुख कंज छवि, पलक न परत सुहाय ।
धन्य अपनपौ गनत हौं, तुमसो धन पाय ।।४५

तेरे किंकरि वर्ग को, हौं हौं सदा अधीन ।
देउ अपनपौ दीन ह्वै, मैं न गनौ कछु दीन ।।४६

प्रेम भरे प्रिय बचन सुनि, प्रिया मधुर मुसकाय ।
बारि विभूषण बचन पर लिये लाल उरलाय ।।४७

।। सोरठा ।।

रंग रंगीले लाल, रंग रंगीली लाड़िली ।
बिहरत नैन बिशाल, रंग रंगीली अलिन में ।।४८

।। दोहा ।।

बहु सुगंध कुसुमन रची, दुग्ध फेन समसैंन ।
ऐन मैन मन अलिन यह, रचै मैन को ऐन ।।४९

सैन साल मेंहित भरे, तापर पौढ़त आइ ।
रसमन बचन अगम्यसों, कहौ कौन पै जाइ ।।५०

नील पीत छबि सों भरे, पहिरे बसन सुरंग ।
जनु दंपति यक रूप ह्वै, परसत प्यारे अंग ।।५१

नील पीत नव बसन छबि, हिलिमिलि भये यकरंग ।
हरे हरे अलि कहत हैं, हिये धरि सिय पिय अंग ।५२

रस बिलसत प्रीतम सुखहि, चिर निशिचाह प्रवीन ।
चन्द्रकला चंद्रहि निरखि, मधुरजंत्र सुरकीन ।।५३

सुख निद्रा पौढ़े उरध, नारी स्वरसे होय ।
प्रेम समाधि लगी मनौ, सखि जानत सूखसोय ।।५४

अलि कुकुट धुनि सुनि, डरे, रविहि देत यह टेर ।
कहि गुरूजन ऐहैं इहां, भलो नहीं यह बेर ।।५५

अमल सेज पर कमल से, दृगन सलोने गात ।
निशि हुलसे बिलसे लसे, अलसे उठे बिभात ।।५६

जगे कुवँर रस रंग भरे, पगे परस्पर प्रेम ।
उमगे गल बहियां लगे; पगेकि मरकत हेम ।।५७

कहि पिय-२ प्यारी बिवस, नहि तन बसन सम्हाल ।
घुर्मित दृग दोउ झुकि रहे, रस मतवारे लाल ।।५८

महाप्रेम आवेसते, भये तन मय आकार ।
हौं प्रीतम हौंहीं प्रिया, यह रहि गयो बिचार ।।५९

।। सोरठा ।।

उलटि बढ़ीतव प्रीति, नवल लड़ैती लाल हिय ।
कै बहुरचो वहरीति, प्रेम स्वाद बहु विधि लहे ।।६०

।। दोहा ।।

नेह सरोवर कुवँर दोउ, रहे फूलि नवकंज ।
अनुरागी अलि अलिनके, लपटे लोचन मंजु ।।६१

दंपति प्रेम पयोधि में, जो दृगदेत सुभाइ ।
सुधि बुधि सब बिसरत तहाँ, रहे सुबिसमै पाइ ।।६२

कबहुँक सुन्दर डोल महि, राजत युगल किशोर ।
अद्भुत छबि बाढ़ी तहाँ, ठाढ़ी अलि चहुं ओर ।।६३

हिलिमिलि झूलत डोल दोउ, अलिहिय हरने लाल ।
लसी युगल गल एकही, सुमन कुसुम मयमाल ।।६४

सुन्दर गलबहियां दिये, लालन लसे अनूप ।
तन मन प्रान कपोल दृग, मिलत भये इक रूप ।।६५

गौर श्याम बिचरत भये, मनहुँ किहैं इक देह ।
सोहैं मन मोहैं ललन, कोहैं हरतिय नेह ।।६६

पिय कुंडल तिय अलक सों, कर कंकण सौमाल ।
मनसोमन दृग दृगन सों, रहे उरझि दोउलाल ।।६७

यद्यपि दंपति परसपर, सदा प्रेम रसलीन ।
रहे अपनपौ हारिकै, पै पिय अधिक अधीन ।।६८

श्याम बरण अम्बरन को, सुकृत सराहत लाल ।
छरा हरा अँग रागभो, चाहत नैन बिशाल ।।६९

जो हिमहूँ को नामसी, कोउ उचरत सुखकन्द ।
तिहि मुख की मुखके ओर हित चितै रहत रघुचंद । ७०

जनकनन्दनी नाम नित, हितहिय भरि जो लेत ।
ताके हाथ अधीन ह्वै, लाल अपनपौ देत । ७१

प्राण प्यारी ललित पग, धरत फिरत जिहिठौर ।
ताहि दृगन हित बिवश ह्वै, लावत नवलकिशोर ।।७२

हार पदिक कुण्डल तिलक, कबहुँ अंक तनतीय ।
छिनही छिन बिनहीं ठरे, रहत संवारत पीय ।।७३

कबहुं उड़ावत भ्रमर पिय, हाँकत कबहुँ बयार ।
प्राण प्रिया हंसि गहतकर, कहत अली बलिहार ।।७४

।। सोरठा ।।

कुवँर सांवरे गौर, हिय हरने दोउ लाड़ले ।
नवल रसिक शिरमौर, रूप भरे बिहरत रहत ।।७५

।। दोहा ।।

अङ्गराग दै अलिन मिलि, किये ललन तन गौर ।
इक छबि ह्वै प्रीतम प्रिया, ललित लसे इकठौर ।।७६

कुसुम कीट कवरी गुही, रंग कुमकुम मुख कंजु ।
अंजन अजित युगल दृग, नाशा बेसरि मंजु ।।७७

श्रुति कुंडल भल दशन दुति, अरुणा अधर छबिऐन ।
हितसों हँसि बोलहीं हिय हरने मृदु बैन ।।७८

भुजगर उर कटि कुसुममय, धरि भूषण पटपीत ।
पाँयन नव नूपुर कहौं, ललित लसे दोउ मीत ।।७९

एक चित्त दोउ एक बय, एक नेह इक प्राण ।
एकरूप इक बेश ह्वै, क्रीड़त कुवँर सुजान ।।८०

रीझि चितै चित चकित ह्वै, रूप जलधिसी बाल ।
बारत लाल तमाल दुति, अङ्ग माल दै माल ।।८१

सब अपने भूषण बसन, अपने ही कर लाल ।
लाड़िली अङ्ग बनाइ छबि, निरखहिं नैन विशाल ।।८२

कबहु अचानक आय दृग, मूदत नवल किशोर ।
छलसे गहिलीनों मनों, निज हिय हरने चोर ।।८३

कबहुँ निहारत नृत्य सुख, ललन आइ तिहि गेह।
जहँ चातुर पातुर अली, गावत पिय नवनेह ।।८४

कबहुँ तहां हिय उमगि दोउ कुवंर करत कलगान।
अलीरूप रागिनि तहां, बारत अपने प्राण ।।८५

कबहूँ चितै दोउ परस्पर, रूप जलधि से गात।
रीझत बारत अपनपौ, कहत बिवस ह्वै जात ।।८६

।। सोरठा ।।

करहिं अली रसपान, जिनके जीवन कुवंर दोउ।
वारहिं तन मन प्रान, निरखि निरखि नवनेह छबि ।।८७

।। दोहा ।।

इहि विधि बिलसैं रैनि दिन, युगल कुवंर रसरासि।
दिव्य अमल आनन्दमय, परे प्रेम की पासि ।।८८

समय पाय सिय मिलन हित, आई गुरूपुर नारि।
रहसि कहत चित चकित ह्वै, छबि सो भाग्य निहारि ।।८९

एरी सिय बरणौं कहा, तब सौभाग्य अपार।
लग्यो रहत बहुरूप धरि, हरि जाके आधार ।।९०

नयन मीन कच्छप उरज; अरू नृसिंह कटिठौर।
कृष्ण केश हियराम बलि, बामन तोसम और ।।९१

कोटि कोटि ब्रह्मांड को, एकै ईश्वर जोइ।
तेरी हित चितवन सिये, चहे निरंतर सोइ ।।९२

ब्रह्मशक्र शिव मुनिन के, जो जीवन धन पीय।
ताकी तू जीवन जरी, शील सागरी सीय ॥९३

ब्रह्म रूद्र सुरगण सबै, रहत जासु बसदीन।
सो पिय मुख निरखत रहें, सिय तेरे आधीन ॥९४

बात कहत रसकेलि की, ढिग गुरूजन लजिजीय।
दै निज भूषण नगन मुख, कह्यो मौनशुक सीय ॥९५

॥ पुर बधू बचन ॥

चित इत उत चितवत नहीं, तो गुनमति अतिभीन।
भई उदासी भवनते, तैं दासी करि लीन ॥९६

तेरी छबि हेरी जबै, एरी बलि अलि सीय।
चेरी ह्वै नेरी रहे मेरी मति दृगतीय ॥९७

तू सिय भाग सुहाग सुख, रूपशील गुण रासि।
पग्यो सदाजिहिं प्रेम सों, लग्यो रहैं पिय पासि ॥९८

तेरे हित ब्रत हीय धरो, अस अधीन ह्वै वाल।
तिया नामकी वस्तु अंग; परसि लजावत लाल ॥९९

जानकी है तोसी तुहीं, नहिं समकहुं कोउतीय।
जा कहुं परसत स्वप्नहू, औरन चितई पीय ॥१००

तू पिय के जीय में बसी, बसे जीय तब पीय।
दोऊ इहि उरझनि रसे, लसे अलिन के हीय ॥१०१

॥ सोरठा ॥

अली सुकृत को ऐन, सबै धन्य ये सहचरी ।
नित निरखत हैं नैन, प्रीतम समतेरे सुखनि ॥१०२

॥ दोहा ॥

बीतत पलपल कल्प सम, उठति न लखिपुर बाल ।
आतुर चित रबि ओर तकि, तुरंग न तारतलाल ॥१०३

कबहुं रीझि प्रिय प्रेम पर, सियतन रूप निहारि ।
कहन लगी रसरंग पगी, अली अपनपौ वारि ॥१०४

॥ सखी बचन ॥

तब आनन दृग अर्पिसिय, आन न जानत तीय ।
तेरी आनजु कहत हौं, भल बस कीन्हे पीय ॥१०५

तेरी छबि देखत बिवस, वारि सुसर्बस सीय ।
आतुर चितवत और कछु, इतउत चितवत पीय ॥१०६

सिय जानी रानी तुहीं, सुखखानी प्रवीन ।
मानी छबि पानी किये, रसदानी दृगमीन ॥१०७

हौं वारी सौभाग्य पर, जनक दुलारी बाल ।
चेरी चेरी को चहै, मुख तेरी को लाल ॥१०८

सर्बस तोहिं अर्पेउ पिय, तूं चित लियो चुराय ।
तौतो बिन उनके अली, नहि कछु सीय सुहाय ॥१०९

प्याइ प्रेम मादिक प्रबल, तें प्रिय सुधि बिसराइ ।
करि बस बांधे गुनन सों, तऊ तुहीं मनभाइ ॥११०

बधे एकहूँ ठौर कोउ, सो पर बस ह्वै दीन ।
सब अंगन लालन बँधे, क्यों न होय आधीन ।।१११

बँधो हिय तब रसन सो, बंध्यो श्रवन कलबैन ।
अलि जानकि त्वचा परस रसरूप बँधे दृगनैन ।।११२

।। सोरठा ।।

बँधे रसिक शिरमौर, नाशा अङ्ग सुबास सो ।
रसना चाहत और हैं रसना कहुँ रस बँधो ।।११३

। दोहा ।।

अरुण वरण तव चरण नख हैं कि तरुणि शिरमौर ।
अनुरागी दृग लालके, बसे लसे इहि ठौर ।।११४

जावक पावक रंग छबि, निरखत अलि अनुराग ।
मनुमन भावन प्रेमरस, पावन पायन लाग ११५

गति गायनि पायनि परसि, करि नूपुर झंकर ।
पिय हिय हरने मंत्र को, करत सुचारू उचार ।।११६

जंघ युगल तव जनक जे, अकिगृह उत्सव रंभ ।
पिया प्रेम के भवन के, किधौं सुन्दर बरखम्भ । ११७

गुरु नितम्ब कटि सिंह मिलि, पट गौतमी प्रबाह ।
किंकिणि मुनिगण अमर निज, मन अन्ह वावतनाह ।।११८

नाभि गँभीर कि भ्रमर यह, नेह निमग्न माहि ।
ता महँ पिय मनमगन ह्वैं, नेकहुँ निकरचो नाहि ।।११९

हे अलि सुन्दर उरजयुग, रहे तब उरजु प्रकाश ।
नवल नेह के फन्द द्वै, अकिपिय सुख की रासि ।।१२०

लस्यो श्याम तब तन कस्यो, कंचुकि बसन बनाय ।
राखे हैं मनो प्राणपति, हिये लगाय दुराय ।।१२१

सिय तेरे गोरे गरे, पोति जोति छबिछाय ।
मनहुं रंगीले लाल की, भुजा रही लपटाय ।।१२२

कुसुमित भूषण नगन युत, भुज बल्लरी सुबास ।
लालन बीच तमाल के, कन्धर कियो निवास ।।१२३

चक्र तरौना भौंह युग, अलि बलि दृग मृग जोर ।
रदन अमीकण बदन तव, शशिरथ पीय चकोर ।।१२४

रघुबर मनोरंजन निपुण, गंजन मद सरमैन ।
कंजन पर खंजन किधौं, अंजन अंजित नैन ।।१२५

नथ मुक्ता झलकत पगे, नाशा स्वास सुबास ।
उरझि परयो यह पीय मन, मनहुँ प्रेम के पास ।।१२६

तब अलि झलकत अलक अकि, रस शृङ्गार कि धार ।
श्याम भये रंग भीजि तिहि, प्रीतम प्राण अधार ।।१२७

।। सोरठा ।।

तै तनधारी तीय, सुख सारी बर बरण की ।
करत प्रशंसा पीय, हिय में याके भाग की ।।१२८

॥ दोहा ॥

सब दिशि कंचन मय करत, तव तन जोति अनूप ।
मनु झरि झरि अंगन परै, अङ्ग न मावै रूप ॥१२९

सिय तब रूप अपार पिय, पियत न नैन अघाय ।
भये चहत सुरराज से, हिय रे अति अकुलाय । १३०

रूप भार गुण भार नव, योबन भारहिं पाइ ।
क्यों सहिहैं दृग भार तो, निरखत नाह दुराइ ॥१३१

वारि अपनपों दृष्टि तै, डरि अलि कछूक होन ।
रहत उतारत हीय महिं, पियहूं राई लोन ॥१३२

सर्बस वाँरत बिवश ह्वै, तेरी छबिहिं निहार ।
बारि बारि पीवत रहत, बारि बारि पिय बारि ॥१३३

तूँ सिय पिय के रंग रंगी, रंगे पीय तब रंग ।
रहे अली इक रूप ह्वै, ज्यों जल मिले तरंग ॥१३४

कबहुँ कहत पुर वधुन सों, निजहिय हित की बात ।
स्वामिनि के गुणगण सुमिरि,किंकरि गातन मात ॥१३५

॥ किंकरी बचन ॥

हम सम धन्य न और भूवि, भरे भाग्य भरिपूरि ।
जिनके सियसी स्वामिनी, पियकी जीवन मूरि ॥१३६

हैं हमरे बलजात कुल, सिय पद कल जल जात ।
पुण्य व्रत सुख ब्रात पुनि, तात मात हित भ्रात ॥१३७

कृपा अमिय मय दृष्टि सों, करत रहत नित पोष ।
कबहुं न हिय में धरत हैं, अपने देखे दोष ॥१३८
अवगुण निधि हम हैं सही, एकहि गुण कमनीय ।
पति आधीन सुनायिका, लही स्वामिनी सीय ॥१३९
स्वामिनि के बल गर्वसों, हम न गनत हैं काहु ।
रहत नित्य निर्भय भई, प्रतिदिन अधिक उछाहु। १४०
हमरे शिर पै स्वामिनी, होउ सदा यह सीय ।
जन्म जन्म हम किंकरी, रहैं चहैं निज हीय ॥१४१

॥ सोरठा ॥

धरैं सीयपद ध्यान, यहि बिधि मंजु समाज सुख ।
बसहिं पीय के प्राण, प्रेम प्रगट तेहिं भक्तिमय ॥१४२
सिय मूरति जेहिं हिय बसी, तापहिं नैन बिशाल ।
उररानें आवत चले, पारावत से लाल ॥१४३
जनक सुतासम देवता, कहौ कौन जग और ।
जाके बस रघुबीर पिय; ब्रह्म रूद्र शिरमौर ॥१४४
योग यज्ञ तप नेमब्रत, त्याग त्यागिये दूरि ।
होय अनन्य ब्रत सेइये, श्रीजानकि पद धूरि ॥१४५
हौं अल्प कृशसेव बिनु, दीन जानि करू नेहु ।
सकल सुकृत मिलि सीयपद, धूरि भूरि फल देहु ॥१४६
उमारमा सरस्वति सची, जिहि बिभूति के रूप ।
जयति सिया अह्लादिनी, शक्ति शक्तिगण भूप ॥१४७

ए अलि नेह प्रकाशिका, बचन हिये में राखि ।
त्रिविध सजाती भक्त बिना, जिन कतहुँ कछु भाखि ॥१४८

॥ सोरठा ॥

दम्पति नेह प्रकाश, कथा सजिवन अलिन की ।
ह्वै वहैं परिहास, आन श्रवण मुख परत ही ॥१४९

॥ दोहा ॥

कहत सुनत पुनि गुनत जिहि, हिय दम्पति दरसाहिं ।
सियवर नेह प्रकाशिका, बसै सदा उर माहिं ॥१५०

प्रगटि नव श्रुति सिंधु शशि, गणित समय शुभ सोई ।
दुख हरनि मंगल करनि, भक्ति वितरनि होई ॥१५१

यह मन नेह प्रकाशिका पुरि भुरि हिय आस ।
करहु लड़ैती लाल के, चरण दास के दास ॥१५२

॥ दोहा ॥

जनकललो की सहचरी बालअली विख्यात ।
बन्दौं तेहि पद युगल शुभ सोभित सुठि जल जत ॥

इति श्रीमच्चरणदासानुजीवी श्री बालअली कृत
नेह प्रकाश सम्पूर्णम्-शुभम्